Write short notes on Tripitaka and Jataka

March 2019

महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात बौद्ध भिक्षुओं ने राजगृह में एक सभा का आयोजन Thursday 21
किया जिसमें बुद्ध द्वारा स्थापित नियमों एवं सिद्धान्तों को संग्रहीत कर स्थाई बनाने स्वीकार किया जिसको अजात शत्रु ने लिपिबद्ध कराया। यही लिपिबद्ध नियम त्रिपिटक कहलाता है। इसके बाद तीन और सभा कर इसको अन्तिम स्थायित्व प्रदान किया गया। पिटक का शाब्दिक अर्थ पिटारा अथवा टोकरी होता है प्राचीन काल में बौद्धसभाओं पवित्र नियम कथा, सूत्र को तीन पिटारों में रखा गया यह पाली भाषा में लिखा हुआ था यही त्रिपिटक है जिसका नाम इस-प्रकार है: (1) सुत्तपिटक (2) विनयपिटक (3) अभिधम्म-पिटक

(1) सुत्तपिटक ⟶ इस पिटक में पाँच निकाय Friday 22
ग्रंथ है (1) दिग्घनिकाय (2) मज्झिम निकाय (3) अंगुत्तरनिकाय (4) संयुक्त निकाय (5) खुद्दकनिकाय इसके बुद्ध के पूर्वजीवन का वर्णन है, निर्वाण, जाति, वर्ण, यज्ञादि करना आदि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर बुद्ध के विचार संकलित हैं।

विनयपिटक ⟶ इस पिटक में बुद्ध द्वारा बनाये गये संघ के नियमों का संग्रह, बौद्ध भिक्षुओं के रहन सहन, नियमों का पालन का वर्णन है इस सिद्धान्त को संग्रह करने में दो सौ वर्ष से भी अधिक समय लगा था।

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

23 Saturday

अभिधम्मपिटक → इस पिटक में [illegible] है कि
गृहत्याग से निर्वाणप्राप्ति संघों की स्थापना
उनके पश्चात्य बुद्ध
बुद्ध की मृत्यु तथा उनके पश्चात्य
घटनाओं का मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक
विश्लेषण किया गया है

जातक → जातकों की संख्या इक्कीस है
इसमें बुद्ध के पूर्वजन्म की साढ़े पाँच सौ कथाएँ हैं
सभी बुद्ध के धार्मिक जीवन की घटनाओं पर
आधारित हैं ये कहानियाँ इस प्रकार लिखी गई
हैं मानो बुद्ध स्वयं अपने मुख से सुना रहे
हैं हर एक कहानी में अपने पूर्वजीवन की एक

24 Sunday

कथा का वर्णन कर रहे हैं अन्त में प्रत्येक
का सारांश किया गया है इस जन्म में
किस-किस रूप में उत्पन्न हुए हैं और कैसे कैसे
कार्य कर रहे हैं